पर्यटन तथा बदलती सामाजिक जीवन शैली : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (पुष्कर के विशेष संदर्भ में)

अनिल कुमार जाटावत*, डॉ0 विनीता लवानिया**

**शोधछात्र, समाजशास्त्र विभाग, **फैक्ल्टी ऑफ सोशल साइंस,*
मोहनलाल सुखादिया विश्वविद्यालय, उदयपुर

सारांश

समाजिक विज्ञानों मे किये जाने विभिन्न अध्ययनों का एक अलग ही महत्व होता है एंव सामाजिक दृष्टि से ऐसे अध्ययनों की अपनी एक विशेष महत्ता होती है। अतः ऐसे अध्ययन जिनका कोई सामाजिक महत्व नहीं होता है किये जाने वाले अध्ययन अर्थहीन होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक का सबसे बड़ा सामाजिक महत्व यह हैं, कि जहां एक और इससे भारतीय सभ्यता एंव संस्कृति के विभिन्न तत्वों का ज्ञान होता है वहीं इससे हिन्दु समाज मे धर्म एंव तीर्थ स्थलो की महत्ता एवं समाज मे इनकी भूमिका का ज्ञान पर्यटकों को इस पुष्कर तीर्थ स्थल पर आने से होता है। समकालीन परिस्थितियों मे समस्त विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया के दौर मे है एवं प्रत्येक समाज एंव इसकी विभिन्न सामाजिक संस्थाओं मे परिवर्तन घटित हो रहें है। ऐसी परिस्थितियों मे इस शोध का महत्व ओर भी बढ़ जाता है किस प्रकार से आधुनिकरण व पश्चिमीकरण की शक्तियों के प्रभाव के फलस्वरूप धर्म, धार्मिक विश्वासों, मूल्यों एवं सामाजिक स्थिति, व आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हो रहा है, जो कि भविष्य मे होने वाले शोधों के लिए महत्वपूर्ण आधार हो सकते हैं। इस अध्ययन का सबसे बड़ा महत्व यह ज्ञात करना है कि किस प्रकार हिन्दू तीर्थ विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं में सम्पर्क एंव विस्तार के फलस्वरूप पर्यटको के आने से किस प्रकार से यहां पर समाज मे परिवर्तन कर रहे हैं।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

अनिल कुमार जाटावत*, डॉ0 विनीता लवानिया**

पर्यटन तथा बदलती सामाजिक जीवन शैली : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (पुष्कर के विशेष संदर्भ में)

शोध मंथन, जून 2018, पेज सं0 127–133

Article No. 19
http://anubooks.com
?page_id=581

पर्यटन

अतिथि देवो भवः की संकल्पना काफी पुरानी है तथा यह माना जाता रहा है की अतिथि आगमन से समृद्वि बढती हैं। एशिया की सभी संस्कृतियों में अतिथि सत्कार की परम्परा मिलती है, लोक गीतो, लोक कथाओ, साहित्य की अन्य विधाओं में इसका जिक्र बार–बार किया गया है पर्यटन का अर्थ भ्रमण करना है, घुमना है अग्रेंजी शब्द टुरिज्म अर्थात पर्यटन का सम्बंध टुय्र से है टुय्र शब्द लैटिन भाषा से लिया गया है इस यात्रा के लिए प्रयोग करने के पीछे महत्वपुर्ण कारण छिपा है टुरिज्म का अर्थ एक प्रकार के औजार से है जो एक पहिये की भांति गोलाकार होता है। यह एक गोलाकार पिन है इसी टुरिज्म शब्द यात्रा–चक्र या पैकेज टुय्र या यूं कहें की एक मुश्त यात्रा का विचार सृजित हुआ है जो आधुनिक पर्यटन का मुख्य आधार है, शब्द अनुसंधानो से पता चलता है कि करीब 1643 वर्ष में इस शब्द का प्रयोग विभिन्न स्थानो की यात्रा, मनोरंजन , भ्रमण आदि से लिया गया है।

भारत वर्ष प्रारंभ से ही एक धर्म प्रधान देश रहा है। जहाँ की समस्त व्यवस्थाएं सामाजिक राजनैतिक, नैतिक आर्थिक आदि धर्म को ही केन्द्र बिन्दु मानकर आगे बढी है। भारतीय जीवन के समस्त मूल्यों का निर्धारण धर्म के आधार पर ही हुआ है। धर्म की विशद एवं व्यापक परिभाषा के अतंर्गत धर्म और जीवन अन्योन्याश्रित बने हुए हैं व उनके बीच की विभेद रेखा तिरोहित हो गई है। भारतीयों के लिए धर्म जीवन का आदर्श है और जीवन धर्म का व्यवहार।

प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज में तीर्थ का विशेष महत्व रहा है। इसी महत्व का उल्लेख वेद, पुराण,रामायण, महाभारत आदि महाग्रंथो में किया गया है । हिन्दू धर्म में मोक्ष को ही जीवन का अंतिम उद्देश्य माना गया है व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी तभी बन पाता है जब तक पापों से मुक्त न हो जाये और पापों से मुक्त होने के लिए ही एक हिन्दू को अपने जीवन में इन तीर्थो की यात्रा करनी पडती हैं।

उपलब्ध साहित्य का पुनरावलोकन

साहित्य का पुनरावलोकन द्वारा किसी भी अध्ययन के महत्व को समझने और समस्त उपलब्ध ज्ञान से अनुसंधानकर्ता को परिचित कराने में सदैव योगदान दिया गया है।

प्रांरभ से ही भारतीय समाज में धर्म की अवधारणा का संबंध पवित्रता के साथ रहा है । **Emile Durkheim की पुस्तक The Elementary Forms of the Religious Life (1912:52)**के अनुसार प्रत्येक समाज के सदस्य वस्तुओं को दो अलग अलग वर्गो में विभाजित करते है पवित्र एवं अपवित्र । पवित्रता एवं अपवित्रता की धारणा का सम्ंध समाज के सदस्यो के विश्वासो के साथ होता है। इस प्रकार वस्तुओं का पवित्रता एवं अपवित्रता की श्रेणी में आया उस समाज के सदस्यो की धार्मिक भावनाओं एवं विश्वासों पर निर्भर करता है।''[1]

विधार्थी भारत की सामाजिक वास्तविकताओं में एक संवेदनशील जानकारी हासिल करने के लियें शोध कर रहे है। उन्होने कहा है कि धर्म के विकास के लिए जो लोग पश्चिमी विद्ववानों में बह जाने के लिए नही बल्कि पारम्परिक धर्म की प्रशंसा के लिए कहा।

विद्यार्थियों ने सामाजिक वैज्ञानिकों में आध्यात्मिक मानवतावाद सार्वभौमिक प्रेम और अहिंसा के सन्दर्भ में बात की थी। श्री अरविन्द, रवीन्द्र नाथ टैगोर स्वामी विवेकानन्द, राजाराम

मोहन राय जैसे भारतीय सामाजिक विचारकों को निजी अन्दाज नहीं करना चाहियें। उन्होंने जनजातीय लोगों के बारे में कहा की यह भारतीय उन्हे गम्भीरता से लेने के लिए उन्हें जीववादी और बहुत अलग रूप हिन्दू होने के लिए कहा जाता है।

1951 में विद्यार्थियों उनके अनुसार आदिम जनजाति में सें जनजाति है जिनकी पारिस्थितिक आधार रवेटी, सामाजिक आर्थिक जीवन के बारे में समझाया। उन्होंने कहा की आदमी के साथ रिलेशन का अध्ययन किया । मालर जाति की आत्माओं के चार प्राकर (उकदार आत्माओं, पूर्वजों बुरी, आत्माओं और जादु टोने की आध्यात्मिक शक्ति) की बात की है। विद्यार्थियों मानव विज्ञान को मैदान में लाया है उनका काम हिन्दू गया में पवित्र परिसर में मानव विज्ञान के क्षेत्र के लिए सबसे बडा योगदान के रूप में जाना जाता है। गया हिन्दू तीर्थ का एक पवित्र शहर है उन्होंने एक पवित्र भूगोंल पवित्र प्रदर्शन पवित्र विशेषज्ञों के मामले में पटना का वर्णन किया। इन तीन अवधारणा में से अनिवार्य रूप से चरित्र आत्मा की शुहि व सान प्राप्ति के लिए पवित्र परिसर के दर्शन लोग कर रहे है यह तीर्थ स्थल गया हिन्दू धर्म को दर्शाता है और भारत के विभिन्न को एक जुट करता है।''

हिन्दू संस्कृति एवं सभ्यता के तत्वों को समझने के लिए धर्म की अवधारणा का अध्ययन अति आवश्यक है। **इसी संदर्भ में कोहन** ने भी अपनी पुस्तक **India the social Anthropology of a civilisation in the Anthropology of modern societies series (1971)** में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के तत्वों पर प्रकाश डाला है । इसके अलावा अनेक विद्‌वानों जैसे मिल्टन सिंगर एम.एन. श्रीनिवास एल.पी. विद्यार्थी एवं इनके अनेक छात्रों बी.एन.सरस्वती एस. नारायण माखन झा आदि ने भी धर्म एवं पवित्र सकुलों का भारतीय सभ्यता के आयामों के रूप में अध्ययन किया है। पी. के भूमिक डी.एन. मजूमदार टी.आर सिंह आदि विद्‌वानों ने भी कुछ निश्चित समुदायों की धार्मिक संस्थाओं में होने वाले परिवर्तनो ंका अध्ययन किया है । इसके लिए इन विद्‌वानों ने विभिन्न राज्यों में आयोंजित होने विभिन्न मेलों एवं त्यौहारों का अध्ययन कर परिवर्तन को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में इस प्रकार के अध्ययनों की प्रासंगिकता है इस प्रकार से होने वाले अध्ययन में भारतीय सभ्यता एंव संस्कृति के विभिन्न तत्वों धार्मिक विश्वासों रीति–रिवाजों मूल्यों से अवगत कराते हैं। वही समकालीन समाज में परिवर्तन तेजी से घटित हो रहे हैं, इस प्रकार के अध्ययन एक महत्वपूर्ण शोध के आधार हो सकते हैं। एक पवित्र संकुल के रूप में भारत के अनेक धार्मिक स्थलों का अनेक समाजशास्त्रियों ने जैसे **L.P. Vidyarthee: The sacred complex in hindu Gaya 1961, The sacred complex of kasha 1979, B.N.Saraswati The holy circuit of Nimsar 1985, Milton Singer Traditional India : Stricture and change, Rajendra Jindal-Culture of a sacred town: A Sociological study of Nathdwara 1976** पर शोध कार्य करके महत्वपूर्ण निष्कर्षो को प्रस्तुत किया है।''[3]

कुमार मनीत (1981) :– टुरिज्म टूडे–भारत के संदर्भ में इनके अनुसारपर्यटन का प्रभावी प्रंबधन इस बात पर निर्भर करेगा की तकनीक का क्षेत्र कितना है साथ–साथ वितरण एवं विज्ञापन कितना है। सूचनायें एवं उसका तात्पर्य एवं योजना नियन्त्रण एवं यातायात प्रबन्धन कैसा है। इसका मतलब यह हुआ कि पर्यटन में लाग जगह और वातावरण के साथ सुविधाओं का निर्माण हों।''[4]

के. पुनिया बजेन्द्र (1994) :– हरियाणा में पर्यटन समस्या एवं संभावनाएं इन्होंने बताया कि किसी क्षेत्र/प्राप्त/प्रदेश के पर्यटन मुख्य रूप से विभिन्न पर्यटन संसाधनों पर निर्भर रहता है। लेकिन साथ में सुविधायें एवं सेवायें भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है । इसमें जैसे मौसम प्रक्रियाएं, जलवायु, स्थानीय लोगों का दृष्टिकोण एवं संसाधन एवं नियोजन कैसा है।''[5]

पर्यटन एक लोकप्रिय वैश्विक गतिविधि बन गया है। 2010 में ंदुनिया भर में 940,000,000 से अधिक अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन की तुलना में 4% की वास्तविक रूप में वृद्धि करने के लिए वर्ष 2010 में अरब की वृद्धि हुई पर्यटन महत्वपुर्ण है और ऐसे में इस तरह मॉरिशस, बहामास के रूप में फ्रान्स, मिस्त्र, यूनान, लेबनान, इजरायल, अमेरिका, ब्रिटेन, स्पेन, इटली और थाईलेंड और द्वीप राष्ट्रों के रूप में कई देशों के लिए महत्वपुर्ण मामले है दुनिया भर में घरेलू उत्पाद में एक अनुमान के अनुसार 5% का योगदान उपलब्ध वस्तुओं और सेवाओं के लिए भुगतान में आय की बड़ी मात्रा में लाता है और यह पर्यटन के साथ जुड़े सेवाओं उद्योगों में रोजगार के अवसर पैदा करता है इन सेवाओं में एयर लाईन्स, क्रुज जहाजों और टेक्सी कैब के रूप में परिवहन सेवाओं में शामिल है इस तरह होटल और रिसॉर्ट सहित रहने की जगह के रूप में अथिति सेवाओं के लिए मनोरंजन पार्क, केसीनों, शापिंग मॉल, संगीत स्थानों और थियटर के रूप में है।''[6]

विलियन ने बताया है कि पर्यटक मनोरंजन अवकाश या व्यावसायिक उद्देश्य के लिए खुशी के लिए यात्रा करतें है उन्होने विश्व पर्यटन संगठन के लिए यात्रा और बाहर के स्थलों में रहने वाले लोगों परिभाषित किया है।

पर्यावरणीय पर्यटन के क्षेत्र में महिलायें के सशक्तिकरण महिलाएं है जों मानव के लिए अच्छी बात है। दुनिया भर में उनके संरक्षण पर सभी में माँ के रूप मे ंजमीन और सशक्तिकरण भी समाज का राज्य है क्योकि देश महिलाओं की भागीदारी के बिना प्रगति नही कर सकता। हमें विकास की प्रमुख धारा में महिलाओं को ंशामिल करना होगा तथा मानसिक, शारीरिक, राजनीतिक, सामाजिक शक्ति देने के लिए अधिकार कानूनी रूप से सशक्त करना होगा। आर्थिक रूप से उनके परिवार में शादी से पहले और समुदाय राज्य देश के बाद सभी दुनिया भर में सन्तुलन कायम करतें हुए महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए किया जाना चाहियें। आदमी और महिलाओं के एक दूसरें के साथ अलग नहीं किया जा सकता है। यह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

जो ग्रीक भाषा जिसका अर्थ एक केन्द्र बिन्दु या धुरी के चारों और आन्दोलन वृत्त एक चक्र के अन्त करने के लिए वापस लौटता है जों प्रारम्भिक बिन्दु का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए एक चक्र की तरह एक दौरे या एक राउंड ट्रिप का कार्य है एक यात्रा में प्रतिनिधित्व छोड़ने और फिर मूल प्रारम्भिक बिन्दु की और लोटने को एक कर सकतें है जों ऐसी यात्रा कर लेता है पर्यटक के नाम से जाना जाता है। विपना में पर्यटकों के लिए पर्यटन खुशी के लिए यात्रा है। पर्यटन अन्तराष्ट्रीय हों सकता है या यात्री के देश का हो सकता है विश्व पर्यटन संगठन के लिए यात्रा और के लिए एक से अधिक वर्ष के लिए लगातार अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थान में रहने ंलोगो के रूप में केवल छुट्टी गतिविधि को सीमित किया जा रहा है पर्यटन एक लोकप्रिय वैश्विक अवकाश गतिविधि बन गया है पर्यटन घरेलू या अन्तर्राष्ट्रीय हो सकता है।

पर्यटन कई देश के लिए आय के प्रमुख स्त्रोत है तथा पर्यटन कई देशों की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।"[7]

अनुसंधान अन्तराल

यद्यपि पर्यटनो के लिए पुष्कर क्षेत्र में चिन्तनों एवं शोधार्थियो ने अनुसंधान किये है किन्तु पर्यटन के फलस्वरूप स्थानीय छोटे व्यापारी एव व्यवसायियों अन्य लोगों पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन जिसमें सामाजिक एवं सांस्कृतिक धार्मिक प्रभावों स्पष्ट रूप में देखे जा सके। अतः प्रस्तुत शोध इस कमी या अन्तराल को पूर्ण कर सकने में सक्षम है। इस अन्तराल को करने के लिए शोध जारी है।

उद्देश्य

अध्ययन का विषय कैसा भी हो लेकिन उसके निश्चित उद्देश्यों के निर्धारण के बिना शोध विषय का अध्ययन नहीं किया जा सकता है और इस प्रकार से कियें गये अध्ययन का न तो कोई महत्व होता है न ही अध्ययन को कोई दिशा प्राप्त हो पाती है। अतः अध्ययन को एक निश्चितता प्रदान करने के लिए शोध विषय के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाना आवश्यक है। इसी महत्वपूर्ण तथ्य को ध्यान में रखते हुए पवित्र तीर्थ संकुल पुष्कर के अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है–

- तीर्थपुरोहितो ंके संपूर्ण सामाजिक संगठन एवं जीवन शैली का अध्ययन करना ।
- आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण के प्रभाव के फलस्वरूप तीर्थपुरोहितों के परंपरागत मूल्यो विचारधाराओ एवं उनकी जीवन विधि में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करना।
- पुष्कर सरोवर के चारों और स्थित विभिन्न घाटों एवं पुष्कर स्थित विभिन्न धार्मिक केन्द्रों एवं मंदिरों मे हाने वाली धार्मिक क्रियाओ एवं उनका व्यक्ति के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना ।
- पर्यटन आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण की प्रक्रिया के प्रभावों के फलस्वरूप इस क्षेत्र के लोगों के जनजीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
- विदेशी पर्यटन के फलस्वरूप सामाजिक, आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव एवं पुष्कर के धार्मिक स्वरूप में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना।
- भारतीय सभ्यता एंव संस्कृति के विभिन्नों तत्वों के अध्ययन के साथ परिवर्तन की शक्तियों के फलस्वरूप पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
- विदेशी पर्यटन का सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक स्वरूप में नकारात्मक प्रभावो का अध्ययन करना।
- विदेशी पर्यटन से पुष्कर में नशीली मादक पदार्थ अफीम, गांजा, चरस, शराब एंव अश्लीलता का तीव्र गति से बढना और पुष्कर धार्मिक नगरी विदेशी पर्यटन के द्वारा प्रदुषित होना । इस सन्दर्भ में अध्ययन करना ।

- विदेशीयो के प्रभाव के फलस्वरूप यहा का युवा वर्ग अनेक बुरी आदतो के जाल में फंसता जा रहा है इस विषय के सन्दर्भ में अध्ययन करना ।

उपकल्पनाऐं

अनुसंधानकर्त्ता के द्वारा शोध को एक स्पष्ट दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से एवं अनावश्यक तथ्यों को एकत्रित करने से बचने के लिए अस्थायी कार्य कारण सम्बंधों को स्थापित कर उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया है जिनका कि परिक्षण शोध के दौरान किया गया है वे निम्नलिखित है–

- परिवर्तन की शक्तियों के प्रभाव के फलस्वरूप तीर्थयात्रियों के विश्वासो मूल्यों एवं यात्रा के उद्देश्यों में परिवर्तन आया है।
- आधुनिकीकरण पश्चिमीकरण एवं विदेशी पर्यटन के फलस्वरूप तीर्थ पुरोहित के न केवल सामाजिक संगठन में परिवर्तन आया है बल्कि इनकी विचारधाराओं पंरपरागत मूल्यों एवं जीवनशैली में भी व्यापक परिवर्तन उत्पन्न हुए हैं।
- तीर्थयात्रा के दौरान तीर्थयात्रियों के द्वारा की जाने वाली धार्मिक क्रियाओं में न केवल कमी आयी है बल्कि इन धार्मिक क्रियाओं के संक्षिप्तीकरण के साथ इन क्रियाओं के प्रति विश्वासों में कमी आयी है।
- विदेशी पर्यटन के फलस्वरूप न केवल पुष्कर के लोगो के सामाजिक आर्थिक जीवन में परिवर्तन आया है बल्कि पुष्कर तीर्थ के धार्मिक स्वरूप में परिवर्तन के साथ धर्म का व्यवसायीकरण हुआ है।
- आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण के फलस्वरूप भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के तत्वों का प्रभाव समाज के सदस्यों पर कम होता जा रहा है।
- दुर्खीम द्वारा स्थापित पवित्र एवं अपवित्र की अवधारणा में परिवर्तन के साथ पवित्र एंव अपवित्र के बीच विश्वासों में कमी आयी है ।
- विदेषी युवतियों के साथ पुष्कर के अनेक युवाओ ने वैवाहिक सम्बंन्ध स्थापित कर लिये है। जिससे हमारे हिन्दु धार्मिक विवाह का अघात होने लगा है।
- विदेशी पर्यटको के आने से यहां के लोगो ने अपनी परम्परागत भाषा को भुलकर विदेशी अग्रेंजी भाषा का प्रयोग करने लगा है। जिससे यहां की मुल भाषा का आघात होने लगा है।

अनुसंधान पद्वति

1. **अध्ययन क्षेत्रः–** प्रस्तुत अध्ययन अजमेर जिले के पर्यटन स्थल में किया जायेगा। जिसमें मुख्यतः पर्यटन क्षेत्र तीर्थराज पुष्कर को सम्मिलित किया गया है। अरावली की सुरम्य पहाडियो के मध्य स्थित तीर्थराज पुष्कर तीर्थ होने के साथ हमारी लोक सस्कृति, आध्यात्मिकता, धार्मिक सहिष्णुता, भावात्मक एकता सर्वधर्म समन्वय का

केन्द्र हमेशा से रहा है महाभारत में लिखा है कि तीनो लोकों में मृत्यु लोक महान है और मृत्युलोक में देवताओं का सर्वाधिक प्रिय स्थान पुष्कर है वेदपुराण रामायण तथा महाभारत जैसे धर्म ग्रंथो में जिस तीर्थराज पुष्कर का उल्लेख किया गया है वह तीर्थ स्थल राजस्थान में अजमेंर से 11 किलोमीटर दूर अरावली की सुरम्य पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित है

2. **निदर्शन विधिः—**

उद्वेश्यपूर्ण निर्दशन विधि से अनुंसधान कार्य हेतू अजमेर जिले के पुष्कर क्षेत्र से स्थानीय लोगों/उत्तरदाताओ का चुनाव किया जायेगा । प्रस्तुत अध्ययन पर्यटन एंव बदलती सामाजिक जीवन शैली में कुल 300 उत्तरदाताओ के रूप में पर्यटन केन्द्र से चयन किया जायेगा। इन सभी उत्तरदाताओ का चयन उद्वेश्यपूर्ण निर्दशन विधि से किया जायेगा । इन उत्तरदाताओ में मुख्यतः 30 ऑटो चालक, 60 ठेले वाले, 30 छोटे रेस्टोरेन्ट, 60 होटल, 60 गाइड, 60 पण्डित/ पुजारी के रूप में होंगे । इन उत्तरदाताओ से प्राथमिक तथ्यो का सकंलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययन से सम्बंधित तथ्यो का सकंलन करने के लिए वैयक्तिक अध्ययन पद्वति का प्रयोग किया जायेगा। जिसमें 12 उत्तरदाताओ को सम्मिलित किया जायेगा। प्रत्येक वर्ग में से 2—2 उत्तरदाताओ का अध्ययन वैयक्तिक विधि से किया जायेगा। अर्थात 2 ऑटो चालक, 2 ठेले वाले, 2 रेस्टोरेन्ट वाले, 2 होटल वाले, 2 गाइड एवं 2 पण्डित/पुजारी में चयन किया जायेगा।

तथ्य संकलन प्रविधिः— अनुसंधान संबंधित तथ्य प्राथमिक व द्वितीयक तथ्यों से संकलित कियें जायेंगें।

a. **प्राथमिक स्त्रोतः—** प्राथमिक स्त्रोत संकलन के लिए साक्षात्कार प्रविधि, अनुसूची विधि, अवलोकन विधि, तथा अन्य विधियों से उत्तरदाताओ का चयन करके कुल 300 उत्तरदाताओ से पर्यटन स्थल से सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अध्ययन से संम्बधित जानकारी प्राप्त कि जायेगी।

b. **द्वितीयक स्त्रोतः—** अनुसंधान विषय से संबंधित द्वितीयक स्त्रोत एवं सामग्री का सग्रंहण विभिन्न पुस्तकालयों, दैनिक पत्र—पत्रिकाओं, सामाजिक पंचायतों एवं इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री से किया जायेगा।

संन्दर्भ

1 दुर्खीम, इमाइल : (1912) 'दा एलिमैन्टरी फार्मस ऑफ दा रिलिजियस लाईफ '

2 विधार्थी, एल.पीः (1961) 'दा सीक्रेट कॉम्पलेक्स इन हिन्दु गया ' ऐशिया पब्लिशिंग हाउस लन्दन।

3 कोहनः (1971) 'इण्डिया दा सोशियल एन्थोरोपोलोजी ऑफ ए सिविलाईसेशन इन दा एन्थोरोपोलोजी ऑफ मॉडन सोसायटी सीरीज' ओ.यू.पी.इण्डिया।

4 कुमार मनीतः (1981) 'टुरिज्म टुडे' कनिष्का पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

5 बजेन्द्र, पुनिया, केः (1994) 'हरियाणा में पर्यटन समस्याएं'।

6 हसो, स्पोड : (1998) ' गैसिचेटन्डेर टुयुरिसमुअसुचाई निचेफट'

7 विलियन, दा ओबोल्ड (1998) 'ग्लोबल टुरिज्म'